नंदिता बनो

# फुटपाथ शाला से बदलने लगी जिंदगी

## गरीब, बेसहारा और बैगर्स बच्चे ले रहे एजुकेशन, सिटी में पांच सेंटरों पर लगती हैं फुटपाथ शाला

कोई स्क्वेयर पर भीख मांगता था, तो कोई किसी खाली पड़े प्लाट में कचरा बिनता था, लेकिन अब ऐसे बच्चों के हाथों में भीख के कटोरे और कचरे की थैली की बजाए लिखने के लिए स्लेट और कलम नजर आ रही हैं. इन बच्चों की अंधेरी जिंदगी में शिक्षा की किरण जगमगाने लगी है. यह उपाय नाम की एक संस्था के अथक प्रयासों के चलते संभव हो सका है. संस्था ने फुटपाथ शाला इनिशिएटिव शुरू किया है, जो सड़क और फुटपाथ पर ही गरीब और बेसहारा बच्चों को पढ़ाने का काम कर रही है. शहर में संस्था के सीताबर्डी, यशवंत स्टेडियम, कस्तूरचंद पार्क और माउटरोड पर पांच सेंटर है. जहां सड़कों और फुटपाथों पर ही क्लास लगाकर बच्चों को पढ़ाया जा रहा है.

### ... तो बच्चों को देना पड़ता था लालच

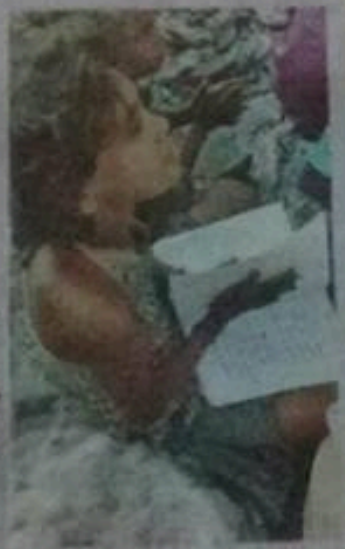

संस्था के वॉलिंटियर प्रवीण कुटे ने बताया कि इस मिशन की शुरुआत में काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ा. फुटपाथ और सड़क पर बच्चों को ढूंढ-ढूंढकर पढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता था, लेकिन कोई भी बच्चा तैयार नहीं होता था, यहां तक कि उनके मां-बाप शराब पीकर उन्हें गालियां देते थे, मारने के लिए दौड़ते थे. यदि कोई खाने-पीने का सामान लेकर जाते थे, तो लूट लेते थे, बाद में उन्हें चॉकलेट और खाने की अन्य चीजें देकर पढ़ाई के लिए प्रोत्साहित किया जाता था, इससे अब बच्चे भी पढ़ाई के लिए खुद ही आगे आ रहे हैं.

### डॉक्टर- इंजीनियर आ रहे पढ़ाने

वॉलिंटर और रिटायर्ड टीचर अर्चना श्रीवास्तव ने बताया कि बच्चों को पढ़ाने और उनके स्टेशनरी का खर्च वॉलिंटर खुद वहन कर रहे हैं. इसके साथ ही टीचर, डॉक्टर, इंजीनियर्स के साथ ही अन्य प्रोफेशन के लोग खुद बच्चों को पढ़ाने के लिए आ रहे हैं. पढ़ाई के साथ ही उन्हें सिटी के प्लेसेस पर विजिट कराई जाती है, यह सिखाया जाता है कि कैसे हाइजीन रहना है, साफ-सफाई रखना है, कैसे बात करना है. ठंड के दिनों में संस्था ऐसे बच्चों को भोजन सामग्री देने के साथ ही ब्लैंकेट और गर्म कपड़े भी उपलब्ध करा रही है. श्री कुटे ने बताया कि करीब सवा साल पहले शुरू किया गया यह इनिशिएटिव अब गरीब, बेसहारा और सड़क पर भीख मांगने वाले बच्चों की जिंदगी में कुछ रंग भरने लगा है.

metro express BUZZ

To Advertise in metro express, call :
Dipak Shahane : 9764545777,
Pravin Lokhande :9766322104,